

उत्तराखण्ड का पुराना लपिलेख दर्रा

चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड के पथौरागढ़ ज़िले की व्यास घाटी में 18,300 फीट की ऊँचाई पर स्थित [पुराना लपिलेख दर्रा](#) 15 सितंबर, 2024 से जनता के लिये सुलभ हो जाएगा।

इससे श्रद्धालु भारतीय भूभाग में तबिबत स्थित [पवतिर कैलाश शखिर](#) के दर्शन कर सकेंगे।

मुख्य बडि:

- लपिलेख दर्रे के माध्यम से [कैलाश-मानसरोवर यात्रा](#) को वर्ष 2019 में [कोवडि-19 प्रकोप](#) के बाद नलिंबति कर दयिा गया था और मार्ग को चीन अधिकारियों द्वारा अभी तक नहीं खोला गया है।
- यह पवतिर ट्रेक भक्तों और साहसी लोगों को चीन के [तबिबत स्वायत्त क्षेत्र](#) में स्थित [कैलाश पर्वत तथा मानसरोवर झील](#) तक ले जाता है।
- [तीर्थयात्री](#) धारचूला से लपिलेख तक कार से जा सकेंगे। वहाँ से उन्हें कैलाश शखिर के दर्शन के लिये लगभग 800 मीटर पैदल चलना होगा
- तीर्थयात्री अब भारतीय भूभाग से [ओम पर्वत](#) के भी दर्शन कर सकेंगे।

कैलाश मानसरोवर

- कैलाश पर्वतमाला की सबसे ऊँची चोटी [चीन अधकित तबिबत](#) में [6,675 मीटर](#) की ऊँचाई पर स्थित है
- [कैलाश](#) और उसके दकषणि में 30 कलिमीटर दूर स्थित पवतिर [मानसरोवर झील](#) की तीर्थयात्रा वशिष रूप से एक सरकारी संगठन, [कुमारु मंडल वकिस नगिम \(KMVN\)](#) द्वारा संचालति की जाती है
 - यह संगठन भारत सरकार के वदिश मंत्रालय और चीन सरकार के सहयोग से कार्य करता है।